शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जून 2014

साहित्य अनुसन्धान: चुनौतियाँ और सम्भावनाएं

विनीता डोशी (शोधार्थी)
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

मनुष्य का समस्त विकास अनुसंधान की देन है। उसकी जिज्ञासु वृत्ति ने एक ओर तो उसे अपनी भीतर खोज करने की प्रेरणा दी, जिससे उसका आध्यात्मिक विकास हुआ, तो दूसरी ओर बाह्य जगत के ओर प्रश्नवाचक दृष्टि रखने से भौतिक उपलब्धियां हासिल की। वास्तव में दोनों की यात्रा विपरीत दिशा से शुरू होकर एक बिन्दु पर समाप्त होती है। प्रस्तुत शोध पत्र में साहित्य के समक्ष अनुसंधान की चुनौतियों और उसकी प्रक्रिया पर विचार किया गया है।

अनुसन्धान का अर्थ

अनुसन्धान शब्द अनु उपसर्गपूर्वक 'धा' (धारण करना, रखना) धातु से बना है। अनु का अर्थ है पीछे लगाना, अनुसरण करना या पुनः करना। और संधान का अर्थ है निशाना लगाना, लक्ष्य बांधना या निश्चित करना। अतः अनुसंधान शब्द का पूणार्थ हुआ पूर्ण एकाग्रता एवं धैर्य, अनवरत परिश्रम से अपने लक्ष्य की और बढ़ना और लक्ष्य प्राप्ति पर्यंत निरंतर बढ़ना। अनुसंधान एक प्रक्रिया है जिसमें प्रदत्तों के विश्लेषण के आधार पर किसी समस्या का विश्वसनीय समाधान ज्ञात किया जाता है। अनुसंधान एक व्यवस्थित तथा सुनियोजित प्रक्रिया है जिसके द्वारा मानवीय ज्ञान में वृद्धि की जाती है और मानव जीवन को सुगम बनाया जाता है। अनुसन्धान कार्यो द्वारा उन प्रश्नों का उत्तर खोजने का प्रयास किया जाता है जिनका उत्तर साहित्य में उपलब्ध है। अथवा मनुष्य की जानकारी में नहीं है। उन समस्याओं का समाधान खोजने का प्रयत्न किया जाता है जिनका समाधान उपलब्ध नहीं है।

मैकग्रेथ तथा वाटसन के अनुसार - "अनुसन्धान एक प्रक्रिया है जिसमे खोज प्रविधि का प्रयोग किया जाता है , जिसके निष्कर्षो की उपयोगिता हो, ज्ञान वृद्धि की जाए , प्रगति के लिए प्रोत्साहित करे , समाज के लिए सहायक हो तथा मनुष्य को अधिक प्रभावशाली बना सके , समाज तथा मनुष्य अपनी समस्याओं को प्रभावशाली ढंग से हल कर सके।"

साहित्यिक अनुसन्धान

ज्ञान पिपासा की तृप्ति सांसारिक विवेक तथा मानव क्षमता का उन्नयन अनुसन्धान का मूल लक्ष्य है। मानव के कष्टों तथा श्रम भार को यथासम्भव कम करके उसके जीवन को सुख-समृद्धि प्रदान करना अनुसन्धान का अंतिम ध्येय है। अनुसन्धान का यह उद्देश्य एवं ध्येय विज्ञान एवं समाजशास्त्रीय शोधपक्षों से सम्बंधित है। और इसमें सांसारिक जीवन के भौतिक एवं व्यवहारिक पक्षों का प्राधान्य है। अतः वैज्ञानिक शोध द्वारा जीवनेच्छा की आंशिक एवं आरंभिक पूर्ति ही होती है। जहां साहित्यिक अनुसन्धान समाप्त होता है

वहां से वैज्ञानिक अनुसन्धान आरम्भ होता है। साहित्यिक अनुसन्धान का कार्य प्रकट तथ्यों से आरम्भ हो कर भावपरक एवं अनुभूतिजन्य सत्य तक जाता है। तथ्य उसके साधन हैं जिनसे उसे सत्य - साध्य प्राप्त करना होता है। भवसत्य अरूपी, निरंतर विश्लेषण साध्य , प्रसरणशील एवं देशकाल सापेक्ष होने के कारण पर्याप्त कठिनाई से ही प्राप्त एवं स्थापित किया जा सकता है। अतः साहित्यिक अनुसंधाता का उत्तरदायित्व पर्याप्त जटिल , विराट एवं गम्भीर होता है। साहित्यिक अनुसंधाता का पथ प्राक्कल्पना, कल्पना (प्रतिज्ञा), विपरीत कल्पना एवं परिकल्पना के मोड़ो से गुजरता हुआ अपने लक्ष्य तक पहुँचता है।

साहित्यिक अनुसन्धान के उद्देश्य

मानव जाति के प्राप्त ज्ञान में प्रामाणिकता के लिए। ज्ञान के नये महत्तवपूर्ण क्षेत्रो के उद्घाटन के लिए। अध्ययन में वैज्ञानिकता एवं विशेषज्ञता लाने के लिए। तर्कमूलक एवं तथ्यमूलक ज्ञान की महत्ता स्थापित करने के लिए। अंधविश्वास, भावुकता एवं मिथ्यातत्व के निवारणार्थ। ज्ञान की नवीन व्याख्या के लिए। ज्ञानवृद्धि एवं आनंद प्राप्ति के लिए। चिन्तन एवं अनुभूति की सुविधाओं के विस्तार लिए।

चुनौतियाँ

शोध किसी समस्या को पहचानने से लेकर उसे सुलझाने तक अथवा सत्य को जानने की अभिलाषा के उदय से लेकर उस सत्य का ज्ञान प्राप्त करने तक कि व्यवस्थित एवं योजनाबद्ध प्रक्रिया या कार्यक्रम है। कोलम्बिया विश्वविद्यालय के जॉन ड्युई ने शोध कि पांच चुनौतियाँ बताई हैं - १. किसी प्रत्यक्ष समस्या का अनुभव लक्ष्य सिद्धि के लिए उचित साधन कि अप्राप्यता की दशा में उसकी खोज। ब) किसी वस्तु के गुणों या स्वभाव कि पहचान। स) किसी अप्रत्याशित सम्भव का विशदीकरण। २.प्रस्तुत समस्या का स्पष्ट शब्दों में कथन। ३.प्रस्तावित विशदीकरण या सम्भाव्य समाधान - कोई अनुमान , संकल्पना , निष्कर्ष या सिद्धांत। ४. पर्याप्त सामग्री या प्रमाणों द्वारा प्रस्तुत समाधान से सम्बंधित विचारों का प्रमाणीकरण विस्तार। ५. भावों का आकलन करके, प्रयोगो द्वारा संकल्पना का परिक्षण। ६. शोध के क्षेत्र तथा सीमाओं का निर्धारण।

समस्या का निर्धारण करना

व्यवस्थित अनुसन्धान के लिए अगली सीधी समस्या को स्पष्ट रूप से पहचान कर उसके स्वरुप का निर्धारण करना है, जिससे निर्दिष्ट दिशा में कार्य करने में सुविधा हो। समस्या निर्धारण के लिए निम्नलिखित कार्य उपयोगी है - १. विषय के बारे में ज्ञात बातों का और उससे सम्बंधित प्रकाशित साहित्य का अध्ययन। २. अध्ययन के बीच आने वाली असंगतियों , विसंगतियों , अस्पष्टताओं तथा वैरूध्यों पर ध्यान। ३. इसके आधार पर तात्कालिक रूप में समस्या का निर्धारण किया जा सकता है।

संभावना

जहाँ अनुसन्धान समस्यामूलक हो , किसी समस्या को हल करने के लिए निश्चित लक्ष्य से प्रेरित हो , वहाँ यह भी सोच लेना चाहिए कि अपने शोध की परिस्थितियों में उसका समाधान हो सकता है या नहीं। 'भारतीय भाषाओं का मूल रूप', 'भारतीय साहित्य की सामान्य प्रवृतिया' आदि विषय इतने विशाल और अस्पष्ट हैं कि

किसी कालावधि के अंदर ठोस निर्णय या शोध-फल की सम्भावना नहीं रखते। कुछ विषय अपनी अस्पष्टता के कारण और दूसरे कुछ प्रमाण सामग्री की अप्राप्यता के कारण वैज्ञानिक अनुसन्धान हेतु उपयुक्त नहीं होते। विषय चयन करते समय ही इस बात का ध्यान रख कर ऐसे ही विषय चुनने चाहिए जिनके बारे में स्पष्ट या निश्चित समाधान उपलब्ध हैं। जहाँ अनुसन्धान समस्यापरक नहीं होता केवल विवरणात्मक होता है , वहाँ यह समस्या नहीं उठती, पर वहाँ भी यह देख लेना चाहिए कि प्रासंगिक सभी सामग्री बिना अपवाद के, पूर्ण रूप से मिल जाती है या नहीं।

अतः सार रुप में कहा जा सकता है कि शोध में बिखरे, अज्ञात एवं महत्वपूएर्ण तथ्यों का संकलन किया जाता है। परोक्ष सबंद्ध सामग्री को भी जुटाया जाता है। अंततः परीक्षण, वर्गीकरण एवं निर्णय के अंनतर शोधार्थी के निष्कर्ष जब एक स्वतंत्र या मौलिक सिद्धान्त के रुप में प्रकट होते हैं तो थीसिस या शोध प्रबंध या महत्वपूर्ण मौलिक स्थापना कहलाते हैं।

निष्कर्ष

अनुसन्धान एक बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य है जिसके फलस्वरूप भविष्य के लिए निरूपित सत्य, प्रमाणित सिद्धांत और गम्भीर विचार जहाँ तक सम्भव हो त्रुटि-रहित, संतुलित और शुद्ध रूप से प्रस्तुत किया जाता है। इसके लिए अनुसन्धान के प्रत्येक पग पर पूर्ण अनुशासन कि आवश्यकता है। शोध कार्य के आरम्भ से लेकर विविध कार्यो में पूरी निष्ठा और तत्परता कि जरूरत है।